भारतीय साहित्य और अनुवाद

प्रो. अन्नपूर्णा सी.

हिंदी विभाग, मानविकी संकाय, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय

एक अवधारणा के रूप में भारतीय साहित्य के क्या संदर्भ हैं इस पर चर्चा करना चाहूँगी। इस शब्द को हम तीन अर्थों में लेते हैं 1) संस्कृत साहित्य, 2) भारतीयों के द्वारा लिखा गया साहित्य और 3) विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखा गया साहित्य। प्रस्तुत अवधारणा में लिखे गए साहित्य को भी भारतीय साहित्य कहते हैं। एक ही प्रकार की आवेगात्मक तथा बौद्धिक अनुभूतियों को ग्रहण करने से भारतीय मानसिकता की अभिव्यक्ति विभिन्न भाषाओं में होने के बावजूद एक रही है। इसी को हम भारतीय साहित्य की मौलिक वैचारिकता या भारतीयता कह सकते हैं।

श्रेष्ठ साहित्य मनुष्य को जीने का सही रास्ता दिखाता है। अच्छे-बुरे की समझ निर्माण करते हुए सुसंस्कारित जीवन जीने की कला सिखाता है। भारत वेद भूमि है। वेदों का ज्ञान ही विद्वानों द्वारा भारतीय साहित्य में उपलब्ध हो रहा है। विभिन्न रूपों का आकार ग्रहण करके हमारे सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। भौगोलिक दृष्टि से भारत एक विशाल देश है और काल की दृष्टि से इसकी संस्कृति, इतिहास, साहित्य और परंपरा बहुत पुरानी है। भारतीय समाज सदियों से बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक रहा है। भारत की भूमि पर जब भी दो भाषाएँ संपर्क की स्थिति में आई तो किसी ने भी अपने अस्तित्व को दूसरे में विलीन होने नहीं दिया। कहा जाता है कि भारतीय समाज ने युगों से भाषाई सहिष्णुता का परिचय दिया है। भारत की यह बहुजातीयता यहाँ बसने वाले भारतीयों के विकास में कभी बाधक नहीं रही। बहुसांस्कृतिक चेतना में उसकी सर्जनात्मक शक्ति की कभी हानि नहीं होने दी और बहुभाषिकता समाज की भाषीय संप्रेषण व्यवस्था में अवरोध का कारण नहीं बनी। संस्कृति और इतिहास को दो आँखों के रूप में लेते हैं तो अनुवाद उसका प्रकाश है। बिना प्रकाश के मानव जी नहीं सकता। भगवान ने अपने ज्ञान के विस्तार के लिए साहित्य का निर्माण किया। वेदों के ज्ञान भंडार द्वारा हमें उस समय की परिस्थितियों, समाज तथा प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी मिल रही है। ज्ञान विज्ञान का विस्तार अनुवाद के द्वारा ही संभव है।

भारतीय साहित्य की मूलभूत अवधारणाओं को तीन मूल स्वरों के रूप में देख सकते हैं। पहला मूल स्वर है- आध्यात्मिक अथवा अंतर दृष्टिपरक (Intuitive), दूसरा मूल स्वर है- आदर्शवाद और तीसरा स्वर है मानवतावाद। उपनिषद् में कहा गया है कि 'मनुष्य ही ईश्वर है' यहाँ मानवतावाद के दो आधार तत्व हैं, त्याग और भक्ति। त्याग के द्वारा तथा भक्ति में समर्पित भावना आती है। उसके अनुसार एक मानव दूसरे मानव के निकट पहुँच सकता है। यह सर्वमानवीय संवेदना भारतीय साहित्य की विशेषता है। इस तरह का मूल स्वर भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य में हमें उपलब्ध होता है। एक दूसरे की भाषा जानने के लिए एक ही आधार है अनुवाद। उससे ही हम दूसरे साहित्य की जानकारी ले सकते हैं भले ही मूलतत्व एक ही क्यों ना हो?

आज भूमंडलीकृत परिवेश में विश्व-संस्कृति का विकास हो रहा है। वर्तमान समय में विश्व 'ग्लोबल विलेज' में बदल चुका है। विश्व संस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। धर्म, दर्शन, साहित्य शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी, वाणिज्य, राजनीति, कूटनीति जैसे संस्कृति के पहलू अनुवाद के द्वारा ही एक जगह से दूसरी जगह पहुँच रहे हैं। आज के युग में हम साहित्य तथा ज्ञान को दो रूपों में देख रहे हैं। सृजनात्मक साहित्य और अनुदीत साहित्य। क्योंकि हम मौलिक तथा भावात्मक दृष्टि से धीरे-धीरे ज्ञान-विज्ञान की ओर बढ़ते हुए तथ्यपरकता पर ध्यान दे रहे हैं। इसके कारण साहित्येतर विषय तथ्यपरक विषयों का तेजी से विकास हो रहा है। इसमें हृदय के स्थान पर बुद्धि से काम ले रहे हैं। इसके पीछे अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है ।

वेद ज्ञान और साहित्य, इतिहास के अनुसार महाभारत और रामायण को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं। इन महा ग्रंथों के द्वारा हमें यह ज्ञात होता है कि उस समय के निर्धारित धर्म और जन-जीवन का परिचय मिल रहा है। महाभारत काव्य का प्राचीन रूप 'विजय' नाम से जाना जाता है। उसके द्वारा भारत खण्ड में राजदर्प और 'दुष्टता' के बारे में जानकारी मिलती है। साथ ही में समाज में कैसे जीना है, नहीं जीना है इसके बारे में बताते हैं। अधर्म का खंडन करके धर्म ज्ञान की ओर ले जाता है। क्योंकि यहाँ श्री कृष्ण और अर्जुन को ले सकते हैं, रणभूमि में अपने लोगों को देखकर अर्जुन सारे अस्त्रों को छोड़ देता है .लेकिन श्री कृष्ण ने उसे वहाँ परिस्थिति का ज्ञान-बोध कराकर युद्ध करने के लिए तैयार किया। उसी समय भगवतद् गीता के द्वारा अर्जुन को उपदेश दिया है। यहाँ भगवान की उपस्थिति स्पष्ट दिखाई देती है। धर्म की स्थापना के लिए भगवान नरावतार में प्रकट होते हैं। यह भी स्पष्ट होता है कि सेव्यमान और सेवक (भगवान और भक्त) कौन हैं ?

The Truth, The good, The beautiful का शाब्दिक अनुवाद सत्यं, शिवं सुंदरम् है। इसमें वाणी के स्तर पर जोर दिया जाता है। अर्थात् साहित्य का आदर्श 'सत्यंप्रियतम' होना चाहिए। यही सत्यं, शिवं, सुंदरम् का भारतीय रूप है। इन तीनों के समन्वय से साहित्यकार उत्कृष्ट रचना की सृष्टि कर सकता है

सत्य कर्तव्य के पथ पर आकर शिव बन जाता है और भावना से संबंधित रहकर सुंदरम् के रूप में दर्शन देता है। अतः सुंदर सत्य का ही परिमार्जित रूप है और सौंदर्य सत्य को ग्राह्य बनाता है। साहित्यकार व्यक्ति सत्य मात्र को महत्व नहीं देता। लोकहित को भी महत्व देता है। शिव वही है जो लोकहित को बना दे। साहित्य हमें आदर्श की ओर अग्रसर करता है। इसी में आनंद की प्राप्ति है। सौंदर्य बाह्य रूप तक सीमित नहीं, उसका आंतरिक पक्ष भी है। आंतरिक रूप ही शिव है अर्थात् सत्व गुण प्रधान सौंदर्य कवि की प्रतिभा से सामान्य जनता के लिए भी ग्राह्य बन जाता है। इस आधार पर साहित्य को एक सार्वभौमिक रूप प्रदान करता है। क्रमशः भारतीय साहित्य में सत्यं, शिवं, सुंदरम् की स्थापना करके विश्वजनीन बनाता है ।

वेद ज्ञान के द्वारा 'नतस्य प्रतिमा नास्तिं' की जानकारी मिल रही है। इसी ज्ञान को महाभारत में कृष्ण तथा रामायण में राम के द्वारा लिखाया गया है। इन महाकाव्यों को उस समय की भाषा संस्कृत में लिखा गया और बाद में उनका अनुवाद भारतीय और विदेशी भाषाओं में हुआ है। आदान-प्रदान के द्वारा ज्ञान का विस्तार हो रहा है। इसका एक मात्र साधन अनुवाद है। इस ज्ञान से विकास के साथ-साथ समाज में अनेकता में एकता की बात को तथा भगवान भी एक ही है को समझ में आने लगा है ।

अनुवाद की प्रवृत्ति के द्वारा यह समझ सकते हैं कि मूल में ज्ञान एक ही है। ज्ञान के संदर्भ में भगवान उसके प्रसारण के लिए कोई भी माध्यम चुन सकते हैं। ज्ञान के लिए सभी प्राणी सक्षम हैं। जैसे- 'श्री काळ हस्ती' को देखा जा सकता है। तीन जानवर मकड़ी, साँप और हाथी अपने तरीके से भगवान की प्रार्थना करके मोक्ष प्राप्त कर चुके। इस लोक में प्राणी का एकैक लक्ष्य है मोक्ष प्राप्ति करना। हर प्राणी अपने ढंग से वहाँ तक पहुँचने का प्रयास करता है। भारत माता को बोलने के लिए 24 भाषाएँ हैं, लेकिन मूल में चिंतन एक ही है। उन्हीं भाषाओं के संगम से जिस साहित्य का निर्माण हो रहा है, उसी का विवेचन करते हैं। मूल में भारतीय साहित्य की मूलभूत अवधारणा आध्यात्मिकता है। उसीके अनुसार भारतीय बहुभाषिक रूपों में साहित्य का निर्माण हो रहा है। ज्ञान

साहित्य के साथ-साथ अनुवाद के द्वारा भी विकसित हो रहा है। आधुनिक साहित्य की प्रवृत्ति है अनुवाद। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में ज्ञान-विज्ञान की सामग्री का बहुत तेज से तेजी से अनुवाद हो रहा है। ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी दृष्टि से आज 'Knowledge Text'का हर भारतीय भाषा में अनुवाद हो रहा है। ज्ञान लोगों तक अपनी-अपनी भाषा में पहुँच रहा है।

भारतीय साहित्य की मूलभूत अवधारणा है (नियति) भारतीयता। इसके साथ सहृदयता, भक्ति, संस्कार, समर्पित भावना आदि भी जुड़ जाते हैं। इन्हीं भावनाओं को साहित्य के द्वारा साहित्यकार व्यक्त करने का प्रयास करते हैं। विभिन्न साहित्यों के द्वारा भिन्न-भिन्न भावनाएँ अभिव्यक्त हो रही है। परंतु मूलभूत अवधारणा है 'भावात्मक एकता' तेलुगु विश्वंभरा काव्य में ज्ञानपीठ पुरस्कृत कवि भी कहते हैं कि

मूल:

सृष्टि कि मूलं ज्ञान बीजं
विश्वभंरा भ्रमणानिकि मूलं
शाश्वत चैतन्य तेजं (मू.पृ.58)

अनु:

सृष्टि का मूल ज्ञान बीज
विश्वंभरा भ्रमण का मूल है
शाश्वत चैतन्य तेज (अनु.पृ.60)

कितनी भी क्षति पहुँचने पर भी विश्व की प्रगति की साधना में निराश न होनेवाला मनुष्य आगे बढ़ता है। मानव मन नित्य संघर्ष करता रहता है। इसी तत्व को भारतीय साहित्य में विभिन्न रूपों में साहित्यकार चित्रित कर रहे हैं। साहित्य के द्वारा विश्व-मानव संस्कृति की स्थापना करते हैं। यह अनुवाद के द्वारा ही संभव है।

मूल:

ऋषित्वनि की पशुत्वानिकी,
संस्कृतिकी, दुष्कृतिकी,
स्वच्छंदतकू, निर्बन्धतकू
समाद्रतकू, रौद्रतकू,
तोलिबीजं मनसु
तुलारूपं मनसु
मनसुकु तोडुगु मनिषि
मनिषिकि उडुपु जगति
इदे विश्वंभरा तत्वं,
इदे अनंत जीवित सत्यं (पृ.99-100)

अनु :

ऋषिता, पशुता का

संस्कृति, दुष्कृति का

स्वच्छंदता, निर्बन्धता का

समार्द्रता रौद्रता का

पहला बीज है मन

तुला रूप है मन

यही है विश्वंभरा का मूल तत्व

यही है अनंत जीवन सत्य (पृ.90-91)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने जीवन को सुखमय बनाने और व्यवस्थित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है। इसी के अनुसार अपने पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करता है। इस संदर्भ में परस्पर संबंधों को और संबंधों की सीमाओं का भी निर्धारण करने का प्रयत्न भी करता है। इन सीमाओं के अंदर रहते हुए जिम्मेदारी के साथ व्यवहार करते हुए धर्म तथा मूल्यों का भी चिंतन करता है ऐसे उच्च आदर्शों को अपनाता है, जिससे सामाजिक स्थिति के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालना चाहता है। उसके अनुसार आगे बढ़ता है। साहित्य सृजन में भी उसे ही लाने का प्रयास करता है। भारतीय साहित्य की मूलभूत अवधारणा आध्यात्मिकता है। उसी के अनुसार साहित्य का सृजन करता है। दूसरी ओर सामाजिक परिवर्तन और विकास के लिए भी विचार करता है। एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए संवेदनशील रहता है। साहित्यकार अपने साहित्य के द्वारा व्यक्त करता है। संवेदनशीलता के साथ मौलिक रूप में धर्म और मूल्य को भी जोड़ कर अभिव्यक्त करता है। भारतीय भाषाओं में इस प्रकार के समाज सुधार वादी रचनाएँ मिलती है। तेलुगु साहित्य में कंदुकूरि वीरेशलिंगम पंतुलु और गुरजाडाअप्पाराव गद्य साहित्य द्वारा तथा विश्वनाथ सत्यनारायण, श्री. श्री., सी नारायण रेड्डी आदि साहित्यकारों ने गद्य और पद्य के द्वारा समाज उपयोगी रचनाओं को प्रस्तुत किया है। वीरेश लिंगम पंतुलु जी आधुनिक आंध्र में सामाजिक व साहित्य चेतना के आदि पुरुष है। वे 'गद्य ब्रह्मा' तथा 'गद्य तिक्कना'नाम से प्रचलित हैं । इन्हें मौलिक साहित्य, अनूदित साहित्य तथा एक सफल पत्रकार, संपादक के रूप में जाने जाते हैं। इनकी रचनाओं का मूल मंत्र है- समाज सुधार। 'राजशेखर चरित्र 'सत्यराज पूर्व देश यात्रलु, अनूदित कहानियाँ आदि प्रसिद्ध है। अन्य भाषाओं के साहित्य से अच्छाइयों को ग्रहण करके तेलुगु भाषा में रूपांतरण करते थे। ऐसे ही गुरजाड अप्पाराव जी भी सामाजिक कुरूतियों को अपनी रचनाओं में दिखाकर उससे समाज मेंचेतना लाने का प्रयास करते थे। उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं –'कन्याशुल्कम'(नाटक), 'पुत्तडिबोम्मा पूर्णम्मा'(कविता) सामाजिक निबंध मुत्याल सरालु(गद्य रचना) तथा अनेक देश भक्ति गीत भी मशहूर है।

"देशमंटे मट्टि कादोय

देशमंटे मनुजुलोय्"

अर्थात् देश का मतलब मिट्टी से नहीं, देश का मतलब उसके निवासियों से है।

इस तरह की रचना के द्वारा मानव कल्याण की प्रेरणा को अभिव्यक्त किया गया।

उपरोक्त विवेचन के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि भारतीय साहित्य की मूल अवधारणा के विकास में अनुवाद की भूमिका अहम् थी, अहम् है, और अहम् रहेगी। इसी नींव के आधार पर वर्तमान विश्व संस्कृति में ई-साहित्य और ई-बुक्स की अवधारणा का भी विकास हो रहा है और आने वाला समय ई-बुक्स की क्रांति का है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विश्वम्भरा काव्य (ते) --- सी .नारायण रेड्डी ,विशालान्द्र प्रकाशन, हैदराबाद
2. विश्वम्भरा काव्य (हिंदी अनुवाद) अनु.डॉ.भीमसेन निर्मल ,लोक-भारती प्रकाशन, इलाहाबाद .
3. तेलुगु की सांस्कृतिक चेतना –डॉ .हेच .एस.एम् .कामेश्वर राव, आंध्रप्रदेश हिंदी अकादमी ,हैदराबाद .